❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

विश्वदेवो महाँ असि। सामवेद 1026
विश्वदेव परमात्मन् ! तू महान है।
O the Lord of the universe !
You are the Greatest of all.

वर्ष 39, अंक 33 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 20 जून, 2016 से रविवार 26 जून, 2016
विक्रमी सम्वत् 2073 सृष्टि सम्वत् 1960853117
दयानन्दाब्द : 193 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 4
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के सहयोग से एस.एम. आर्य पब्लिक स्कूल पंजाबी बाग में

सार्वदेशिक आर्य वीर दल का 15 दिवसीय

राष्ट्रीय प्रशिक्षण शिविर समारोह पूर्वक सम्पन्न

ध्वजारोहण के साथ दीक्षान्त एवं समापन समारोह का शुभारम्भ करते महाशय धर्मपाल जी एवं इस अवसर पर मंचासीन शिविराध्यक्ष डॉ. स्वामी देवव्रत जी साथ में हैं सर्वश्री धर्मपाल आर्य, आचार्य विजयपाल, डॉ. महेश विद्यालंकार, रामनाथ सहगल, देवेन्द्र पाल वर्मा, प्रकाश आर्य, स्वामी धर्ममुनि दुग्धाहारी, स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, महाशय धर्मपाल, डॉ. सत्यपाल, राजेन्द्र, स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती एवं श्री योगेश मुंजाल जी एवं अन्य आर्य महानुभाव।

समारोह की विस्तृत रिपोर्ट एवं चित्रमय झांकी अगले अंक में प्रकाशित की जाएगी – सम्पादक

अवश्य देखें : राष्ट्रीय प्रशिक्षण शिविर के समापन एवं दीक्षान्त समारोह शनिवार 25 जून, 2016 दोपहर 1 से 3 बजे आस्था चैनल पर

अपने सब मित्रों, दोस्तों, परिजनों, परिचितों को व्हाट्एप्प, मैसेज, ईमेल, ट्वीटर, फेसबुक, आदि के माध्यम से सूचना दें और प्रसारण देखने के लिए प्रेरित करें

सम्पादकीय

क्या आत्मरक्षा करना भी गुनाह है?

सरकार कहती है, नारी शक्ति मजबूत हो, जिस देश की माताएं-बहनें मानसिक, आत्मिक रूप से मजबूत होंगी उस देश की आने वाली संतानें भी मजबूत होंगी, जिससे देश व धर्म का मान सम्मान ऊँचा होगा। किन्तु आज के हालात देखे जाएं तो देश के अन्दर हर एक घंटे में हजारों की तादात में महिलाओं के साथ छेड़छाड़, रेप, आदि न जाने कितने शर्म से सर झुका देने वाले केस दर्ज होते हैं। फिर भी यह सब जानते हुए दो दिन से अलीगढ में आर्यवीरांगना शिविर को लेकर कुछेक मीडिया के लोग चीख रहे हैं कि आखिर देश में हो क्या रहा है। रोजाना महिलाओं के होते अपमान पर उनके सम्मान पर चीख-चीख कर सवाल पूछने वाली मीडिया पूछ रही है, क्या वाकई ऐसे हालात हैं कि लड़कियों के लिए अब हर कोई ट्रेनिंग कैम्प लगा रहा है। इन ट्रेनिंग कैम्पों में आत्मरक्षण के लिए तलवार, एयरगन, जुडो कराटे के अलावा प्रेम में धोखे से बचने की ट्रेनिंग इन महिला प्रशिक्षणार्थियों को दी जा रही है। ये कोई नई घटना नहीं है। सबको ज्ञात है आर्यवीर दल, आर्य समाज लड़कियों को आत्मरक्षा, चरित्रनिर्माण प्रशिक्षण देता आया है। शिविर का उद्देश्य बहन बेटियों को आत्मरक्षा, धर्म रक्षा एवं नारी स्वावलम्बन को ध्यान में रखते हुए दिया जाता रहा है, ताकि वे आत्मरक्षा के लिए दूसरे पर आश्रित न रह सकें। यह कोई नई परम्परा नहीं है, न कोई नया रिवाज, हमारे यहाँ तो वैदिक प्राचीन काल का इतिहास नारी की गौरवमयी कीर्ति से भरा पड़ा है नारी जाति ने समय-समय पर अपने साहस पूर्ण कार्यों से दुश्मनों के दांत खट्टे किये हैं। प्राचीन काल में स्त्रियों का पद परिवार में अत्यंत महत्वपूर्ण था गृहस्थी का कोई भी कार्य उनकी सम्मति के बिना नहीं किया जा सकता था। न केवल धर्म व समाज बल्कि रण क्षेत्र में भी नारी अपने पति का सहयोग करती थी। कहते हैं अद्वित्य रण कौशल से कैकयी ने अपने महाराज दशरथ को चकित किया था। गंधार के राजा रवेल की पुत्री विश्पला ने सेनापति का दायित्व स्वयं पर लेकर युद्ध किया। वह वीरता से लड़ी पर टांग कट गयी, जब ऐसी अवस्था में घर पहुंची तो पिता को दुखी देख बोली यह रोने का समय नहीं, आप मेरा इलाज कराइये मेरा पैर ठीक कराइये जिससे मैं फिर से ठीक खड़ी हो सकूं, फिर मैं वापस शत्रुओं का सामना करूंगी।

ऐसी न जाने कितनी वीर माताएं बहनें इस भारत माता की कोख से जन्मी जिसके एक दो नहीं, न जाने कितने त्याग से बलिदान तक के हजारों किस्से यहां मिल जायेंगे। झाँसी की महारानी लक्ष्मीबाई, विदेशी शासकों को खदेड़ने वाले भारतीय स्वाधीनता संग्राम की अमर सेनानी थी। जिन्होंने भारत में सांस्कृतिक जीवन मूल्यों की पुर्नस्थापना के लिए अपने जीवन का सर्वस्व बलिदान कर दिया। कौन भूल सकता है हाड़ी रानी के उस पत्र को जो उसने युद्ध में जाते हुए राजा को भेजा था जिसमें उसने लिखा था मैं तुम्हें अपनी अंतिम निशानी भेज रही हूं। तुम्हारे मोह के सभी बंधनों को काट रही हूं। अब बेफ्रिक होकर अपने कर्त्तव्य का पालन करें मैं तो चली। पलक झपकते ही हाड़ी रानी ने अपने कमर से तलवार निकाल, एक झटके में अपने सिर को उड़ा दिया। ताकि राजा युद्ध में बेखोफ लड़ सके। शिवाजी महाराज की माता जीजाबाई भी किसी प्रेरणा से कम नहीं। ऐसी ही भारत की एक वीरांगना दुर्गावती थीं जिन्होंने अपने विवाह के चार वर्ष बाद अपने पति दलपत शाह की असमय मृत्यु के बाद अपने पुत्र वीरनारायण को सिंहासन पर बैठाकर उसके संरक्षक के रूप में स्वयं शासन करना प्रारंभ किया और मुगल शासकों से लड़ते-लड़ते बलिदान के पथ पर बढ़ गयीं थी।

यदि वो इतिहास पुराना लगता हो तो तमलुक बंगाल की रहने वाली मातंगिनी हाजरा ने 1942 में भारत छोड़ो आन्दोलन में भाग लिया और आन्दोलन में प्रदर्शन के दौरान वे 73 वर्ष की उम्र में अंग्रेजों की गोलियों का शिकार होकर मौत के मुंह में समाई असम के दारांग जिले में गौहपुर गाँव की 14 वर्षीय बालिका कनक लता बरुआ ने 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में भाग लिया। इस कड़ी में स्वतन्त्रता सेनानी दुर्गा भाभी भी किसी परिचय का मोहताज नहीं है। कस्तूरबा गाँधी, जिनका चंपारण से भारत छोड़ो आन्दोलन में योगदान अविस्मर्णीय रहा। इस तरह की नारी वीरता भरी कहानियों से इतिहास भरा पड़ा है.और किसी भी वीरता, धैर्य ज्ञान की तुलना नहीं की जा सकती। किन्तु इस सबके बावजूद नारी को अबला बेचारी कहा जाता है। यदि ये सब वीर महिलाएं गलत थी तो फाड़कर फेंक दीजिये इतिहास को। यदि नहीं तो नारी चरित्र निर्माण आत्मरक्षा शिविर में हस्तक्षेप के बजाय सहयोग कीजिये ताकि हमारे देश कि नारी शक्ति आत्मनिर्भर हो। किन्तु आज इस शक्ति को किस तरह अपमानित किया जा रहा है यह सोचनीय विषय है।

आर्य समाज ने हमेशा नारी शक्ति को ऊँचा उठाया देश और समाज को सन्देश दिया कि नारी हमारे लिए पूजनीय है। आर्य वीर दल के प्रदेश मंत्री आचार्य धर्मवीर जी ने इस प्रशिक्षण शिविर को लेकर ठीक कहा है कि – **– शेष पृष्ठ 2 पर**

वेद-स्वाध्याय

सत्य पर चलें

अप्रतीतो जयति सं धनानि प्रतिजन्यानि उत या सजन्या। अवस्यवे यो वरिवः कृणोति ब्रह्मणे राजा तमवन्ति देवाः।। (ऋ. 4/50/9)

ऋषिः -**वामदेवः**।। देवता - **बृहस्पतिः**।। छन्दः - **निचृत्त्रिष्टुप्**।।

शब्दार्थ - **अ+प्रति+इतः**=पीछे कदम न हटाने वाला ही **धनानि**= ऐश्वर्यों को **सं जयति**=जीतता है, वे ऐश्वर्य चाहे **प्रति-जन्यानि**= वैयक्तिक हों अथवा **या सजन्या**=वे सामूहिक जों और **देवाः**=देव तम्=उस सत्ताधारी राजा की अवन्ति= रक्षा करते है। **यः राजा**=जो राजा **अवस्यवे**=रक्षा चाहने वाले **ब्राह्मणे**= सच्चे ब्राह्मणों की **वरिवः कृणोति**=पूजा किया करता है, उनके आगे झुकता है।

विनय - पीछे कदम न हटाने वाला मनुष्य ही विजय प्राप्त करता है। ऐसा ही मनुष्य विजयी होकर ऐश्वर्यों को पाता है। प्रति-जन से सम्बन्ध रखने वाले वैयक्तिक ऐश्वर्य तथा जन-समूह से सम्बन्ध रखने वाले सामाजिक व राष्ट्रीय ऐश्वर्य उन्हीं जनों या जनसमूहों को प्राप्त होते हैं जिनमें चिरकाल तक लगातार उद्योग करते जाने की शक्ति होती है; जिनमें लगन, धैर्य होता है; जिनमें अड़े रहने, डटे रहने का गुण होता है; जो कभी कदम पीछे हटाना नहीं जानते। जिनमें यह गुण नहीं है ऐसे व्यक्ति या राष्ट्र के लिए संसार में कोई ऐश्वर्य नहीं है, अतः हे व्यक्तियों! तुम धैर्य रखना सीखो; हे राष्ट्रो! तुम मिलकर अन्त तक डटे रहना सीखो।

परन्तु इसका दूसरा पार्श्व भी है। डटे रहना, अन्याय के विरुद्ध और न्याय के लिए ही चाहिए, परन्तु प्रायः दुनिया के सब सत्ताधारी मनुष्य स्वार्थवश हो अन्याय के लिए भी डटे रहते हैं। ऐसे डटे रहने वालों को तो- वे चाहे कितने ही बड़े शक्तिशाली हों-विनाश ही होता है। जगत् के संचालक देव लोग तो उसी सत्ताधारी राजा की रक्षा करते हैं जो न्याय के लिए झुकने वाला होता है, जो सत्य उपदेश देने वाले की बात को नम्रता से सुनता है, अड़ता नहीं है, अतएव ऐसा संरक्षण चाहने वाले सच्चे ब्राह्मणों की सदा पूजा किया करता है। सत्ता धारी लोग यदि अपना कल्याण चाहते हैं तो उन्हें चाहिए कि वे सांसारिक कोई सत्ता न रखने वाले, सबका भला और रक्षण चाहने वाले, नम्र, ज्ञानी पुरुष उन्हें आकर जो कुछ सुझावें उसे वे सत्कार-पूर्वक सुनें और उनकी शुभ सम्मति को तुरन्त पूरा करें।

आवश्यकता इस बात की है कि निर्बल और पद-दलित लोग सत्य पर अड़ना सीखें और सत्ताधारी लोग नम्रना सीखें। इससे भी अधिक आवश्यकता यह है कि प्रत्येक मनुष्य सदा देखे कि वह कहीं बलवान्, अन्यायी के सामने झुक तो नहीं जाता है, कदम पीछे तो नहीं हटा लेता और असत्ताधारी सच्चे पुरुष के सामने अड़ा तो नहीं रहता?

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित हेतु मो. नं. 9540040339 सम्पर्क करें।

बोध कथा

जीवन सितार बजाओ

लाहौर में एक बार आर्यसमाज का उत्सव हो रहा था। एक सज्जन आए; बोले-''मैं बहुत अच्छी सितार बजाकर गाता हूं। मुझे एक गीत सुनाने का समय दिया जाये।''

प्रोग्राम में से कोई समय निकलता नहीं था, परन्तु कई दूसरे व्यक्तियों ने भी समय देने के लिए कहा तो मन्त्री जी ने कहा-''अच्छा, पन्द्रह मिनट आपको दिये जाते हैं। पन्द्रह मिनट में अपना गाना समाप्त कीजिये।''

गाने वाले सज्जन अपने सितार को लेकर स्टेज पर आ पहुंचे और अपने सितार की तारों को हिला-हिलाकर कीलियां मरोड़ने लगे। थोड़ी-थोड़ी देर के पश्चात् टंग-टंग की ध्वनि होती और फिर कोई कीली मरोड़ी जाती। इस प्रकार पांच मिनट व्यतीत हो गए। मंत्री जी ने कहा-''श्रीमन्! आप गायेंगे भी या इसी प्रकार कीलियां मरोड़ते रहेंगे?''

वे बोले-''श्रीमन्! अभी गाता हूं, सितार के तार ठीक कर लूं।'' और फिर कीलियां मरोड़ने लगे। दस मिनट व्यतीत हो गये। बारह-चौदह मिनट बीत गये, उनका कीलियां मरोड़ना समाप्त नहीं हुआ। मंत्री जी ने कहा-''एक मिनट शेष है, अब भी कुछ गाना हो तो गा लो।''

वह अन्तिम मिनट में भी कीलियां ही मरोड़ते रहे। मंत्री ने खेद के साथ कहा-''आइए श्रीमन्! मंच सेनीचे उतर आइये, आपका समय हो गया।''

अरे ओ जीवन रूपी सितार बजाने वालो! सोचो! सोचो कि कब तक तुम सितार की कीलियां ही मरोड़ते रहोगे, शरीर को बनाते ओर संवारते ही रहोगे? अरे! यह सितार गाने के लिए मिली है, केवल मरोड़ने के लिए नहीं। शरीर की रक्षा करना आवश्यक है, इसे खिलाओ-पिलाओ। इसे स्वस्थ बनाये रखो, परन्तु आत्मा को भी तो कुछ खिलाओ, जो वास्तविक गाने वाला है। इसके बिना यह सितार व्यर्थ है। इसके बिना आंख देखती नहीं, हाथ हिलता नहीं, जिह्वा चलती नहीं, नाक सूंघती नहीं- कुछ भी नहीं होता।

बोध कथाएं : वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित हेतु मो. नं. 9540040339 सम्पर्क करें।

शोक समाचार

श्री ए.सी. धीर जी को मातृशोक

आर्यसमाज भोगल जंगपुरा नई दिल्ली के मन्त्री श्री ए. सी. धीर जी की पूज्या माता श्रीमती कौशल्या देवी जी का रविवार 19 जून, 2016 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ 20 जून, 2016 सोमवार को लोधी रोड पर पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। इस अवसर पर आस-पास की अनेक आर्यसमाजों के पदाधिकारियों ने पहुंचकर माताजी को अन्तिम विदाई दी।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा
के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

आर्य समाज विवेक विहार में वृहद यज्ञ का आयोजन

विश्व पर्यावरण दिवस पर 5 जून 2016 को आर्य समाज विवेक विहार द्वारा ए ब्लॉक पार्क में वृहद यज्ञ का अयोजन किया गया जिसमें क्षेत्र के निवासियों द्वारा उत्साह पूर्वक भाग लिया। सभी उपस्थित सज्जनों को यज्ञ की पुस्तकें एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित पर्यावरण विषयक विशेष पत्रक वितरित किए गए। - *उषा किरण, प्रधान*

142वां सत्यार्थ प्रकाशोत्सव

आर्यसमाज विकास पुरी डी ब्लाक नई दिल्ली के तत्त्वावधान में सत्यार्थ प्रकाश के 142वें प्रकाश उत्सव का आयोजन दिनांक 1 जुलाई, 2016 को सायं 6 बजे से किया जा रहा है। इस अवसर पर यज्ञ ब्रह्मा श्री सूर्य देव शास्त्री, भजनोपदेश श्री दिनेश आर्य तथा प्रवचन श्री वेद प्रकाश श्रोत्रिय जी के होंगे। विशिष्ट अतिथि दिल्ली सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य होंगे। आर्यजन अधिकाधिक संख्या में उपस्थित होकर धर्मलाभ प्राप्त करें।

- *हरीश कालरा, प्रधान*

महिला योग जागृति शिविर

वानप्रस्थ साधक आश्रम, आर्यवन, रोजड़, गुजरात में 4 से 9 जुलाई 2016 के मध्य महिला योग जागृति शिविर का आयोजन किया जा रहा है। 15 से 40 वर्ष की महिलाएं ही भाग ले सकती हैं। शिविर शुल्क 600/- देय होगा। बिना स्वीकृति के शिविर में आने वाली महिलाओं को 600 के स्थान पर 1000/- शुल्क देय होगा। शिविराथियों को 10 वीं कक्षा उत्तीर्ण होना अनिवार्य है। वितृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें-

व्यवस्थापक, 02770-287417, 291555, 9427059550

डी.डी.ए. पार्क हस्तसाल में यज्ञ प्रवचन

आर्य समाज विकास नगर, उत्तम नगर नई दिल्ली द्वारा 12 जून 2016 को प्रातः सांय डी.डी.ए. पार्क हस्तसाल में आयोजित साप्ताहिक सत्संग में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री सुखबीर सिंह जी ने स्कूली छात्रों की उपस्थिति में यज्ञ कराया तथा डॉ. बृजेश गौतम जी ने प्रवचन दिया।

इस अवसर पर आर्य समाज विकास नगर के पदाधिकारी एवं सदस्यगण एवं आम जनता की अच्छी उपस्थिति दर्ज की गयी। - *दयानन्द त्यागी, प्रधान*

प्रथम पृष्ठ का शेष

हम बच्चों के शारीरिक आत्मिक और सामाजिक उत्थान के लिए ऐसे कैम्प पूरे देश में लगाएंगे। इस कैम्प में हमने बच्चों को आत्मरक्षण और बौद्धिक चीजें सिखाई हैं। देश में लड़कियों को हेय दृष्टि से देखा जाता है, उनके अंदर आत्म विश्वास जागे, इसलिए हमने ये कैम्प लगाया है। राष्ट्र को भ्रष्ट करने की जो साजिश होगी हम उसके खिलाफ खड़े होंगे हम अपनी संस्कृति को बचा रहे हैं। हमने इन बच्चियों को बताया है कि दोस्ती और थोड़े प्रलोभन के चक्कर में न फंसे। अपने गुरु, माता-पिता की आज्ञा का पालन करें। इसमें कुछ गलत कैसे हो गया क्या अब आत्मरक्षा करना भी जुर्म और पाप हो गया? -*सम्पादक*

मेरी ढ़ाई शंका!

....जिस क्षेत्र में मुस्लिम बहुसंख्यक होते हैं कट्टर इस्लामिक शासन की मांग होने लगती है मतलब उदारवाद नहीं रहता, लोगों से स्वतंत्रता जैसे छीन ली जाती है आप इसका कारण स्पष्ट करें में इस्लाम स्वीकार कर लूँगा!.....मेरी दूसरी शंका है, पूरे विश्व में यदि वैश्विक आतंक पर नजर डालें, तो इस्लामिक आतंक की भागीदारी 95 फीसदी के लगभग है। हर एक मरने या मारने वाला आतंकी मुस्लिम ही क्यों होता है? अब ऐसे में यदि मैंने इस्लाम स्वीकार किया तो आप मुझे कौन सा मुसलमान बनायेंगे? हर रोज कभी आतंकियों का शिकार हो जाता है या वो मुसलमान जो हर रोज बम धमाके कर मारने वाला, इस्लाम के नाम पर मासूमों का खून बहाने वाला?. .....बाकी बची आधी शंका मेरी धर्मपत्नी की है।.....

शंका दो हों या तीन किन्तु यह ढाई शंका कैसे? जितनी उत्सुकता यह जानने की आप लोगों को हो रही होगी उतनी ही मेरी थी। यह कोई कहानी नहीं बल्कि एक जीती जागती सत्यघटना है जिसने एक मुस्लिम विद्वान को निरुत्तर कर दिया था। वाक्या जनवरी 2016 विश्व पुस्तक मेले का था। देश, विदेश से आये पुस्तक प्रेमी धार्मिक, सामाजिक, स्वास्थ्य और साहित्य आदि पर लिखी पुस्तकें खरीद रहे थे किन्तु इन सबके बीच पुस्तकों की आड़ में कुछ सम्प्रदाय धर्मातरण का कुचक्र भी रच रहे थे। एक चर्चित इस्लामिक स्टाल पर कुछेक लोगों की भीड़ देखकर मैं भी पहुँच गया। पता चला कुरान ए शरीफ लोगों को नि:शुल्क वितरित की जा रही है। शांति प्रेम और आपसी मेल जोल को इस्लाम का संदेश बताया जा रहा था। खैर जिज्ञाशा वश मैंने भी फ्री में कुरान पाने को उनका दिया आवेदन पत्र भरने की ठानी जिसमें वे नाम-पता और मोबाइल नम्बर लिखवा रहे थे ताकि बाद में लोगों से सम्पर्क साधा जा सके। एकाएक एक सज्जन अपनी धर्मपत्नी जी के साथ स्टाल में पधारे सामान्य अभिवादन के पश्चात् उन्होंने मुस्लिम विद्वान् के सामने अपना प्रश्न रखा कि मैं अपनी धर्मपत्नी के साथ इस्लाम स्वीकार करना चाहता हूँ!

यह सुन मुस्लिम व्यक्ति के चेहरे पर प्रसन्ता की अनूठी आभा छा गयी। मुस्लिम धर्मगुरु ने अपने दोनों हाथ खोलकर कहा आपका स्वागत है। लेकिन उन सज्जन ने कहा इस्लाम स्वीकार करने से पहले मेरी ढाई शंका है आपको उनका निवारण करना होगा। यदि आप उनका निवारण कर पाए तो ही मैं इस्लाम स्वीकार कर सकता हूँ! मुस्लिम विद्वान ने चेहरे से प्रसन्ता के भाव छिपाते हुए प्रश्न किया महोदय शंका या तो दो हो या तीन। ये ढाई शंका का क्या तुक है?

सज्जन ने अपने मुस्कुराते चेहरे से कहा जब मैं शंका रखूँगा, आप खुद समझ जायेंगे यदि आप तैयार हों तो मैं अपनी पहली शंका आपने सामने रखूं? मुस्लिम विद्वान् ने कहा जी रखिये।

सज्जन- मेरी पहली शंका है कि सभी इस्लामिक बिरादरी के मुल्कों में जहाँ मुस्लिमों की जनसंख्या 50 फीसदी से ज्यादा है मसलन बहुसंख्यक है उनमें एक भी देश में समाजवाद नहीं है, लोकतंत्र नहीं है, वहां अन्य धर्मों में आस्था रखने वाले लोग सुरक्षित नहीं है, जिस क्षेत्र में मुस्लिम बहुसंख्यक होते हैं कट्टर इस्लामिक शासन की मांग होने लगती है मतलब उदारवाद नहीं रहता, लोगों से स्वतंत्रता जैसे छीन ली जाती है, आप इसका कारण स्पष्ट करें, मैं इस्लाम स्वीकार कर लूँगा! मुस्लिम विद्वान के चेहरे पर एक शंका ने हजारों शंकाएं खड़ी कर दी थी, फिर उसने हिम्मत कर कहा दूसरी शंका प्रकट करें।

सज्जन - मेरी दूसरी शंका है, पूरे विश्व में यदि वैश्विक आतंक पर नजर डालें, तो इस्लामिक आतंक की भागीदारी 95 फीसदी के लगभग है। हर एक मरने या मारने वाला आतंकी मुस्लिम ही क्यों होता है? अब ऐसे में यदि मैंने इस्लाम स्वीकार किया तो आप मुझे कौन सा मुसलमान बनायेंगे? जो कभी भी आतंकियों का शिकार हो जाता है वह मुसलमान या जो हर रोज बम धमाके कर मारने वाला, इस्लाम के नाम पर मासूमों का खून बहाने वाला? औरतों को निर्वस्त्र कर बाजार में बेचने वाला, मतलब मैं मरने वाला मुसलमान बनूंगा या मारने वाला? इस प्रश्न ने मानों उन मुस्लिम विद्वान पर हजारों मन बोझ डाल दिया हो! दबी सी आवाज में उसने कहा बाकि बची आधी शंका भी बोलें? आर्य सज्जन ने मंद सी मुस्कान के साथ कहा वो आधी शंका मेरी धर्मपत्नी जी की है। इनकी शंका आधी इसलिए है कि इस्लाम नारी समाज को पूर्ण दर्जा नहीं देता हमेशा उसे पुरुष की तुलना में आधा ही समझता है तो इसकी शंका भी आधी है। मुस्लिम विद्वान ने कुछ लज्जित से स्वर में कहा जी मोहतरमा फरमाइए!

सज्जन की धर्मपत्नी ने बड़े सहज भाव से कहा, ये इस्लाम कबूल कर लें मुझे इससे कोई आपत्ति नहीं। किन्तु मेरी इनके साथ शादी हुए करीब 35 वर्ष हो चुके हैं। यदि कल इस्लामिक रवायतों के अनुसार किसी बात पर इन्हें गुस्सा आ गया और मुझे तलाक, तलाक, तलाक कह दिया तो बताइए मैं इस अवस्था में कहाँ जाऊंगी? यदि तलाक भी न दिया और कल इन्हें कोई अन्य नारी पसंद आ गयी ये उससे निकाह करके उसे घर ले आये तो बताइए उस सूरत में मेरे बच्चों का, मेरे गृहस्थ जीवन क्या होगा? तो मियां जी ये मेरी आधी शंका है। इस प्रश्न के वार ने मुस्लिम विद्वान को निरुत्तर कर दिया उसने इन जवाबों से बचने के लिए कहा आप अपना परिचय दे सकते हैं। सज्जन ने कहा मेरी शंका ही मेरा परिचय है यदि आपके पास इन प्रश्नों का उत्तर है तभी हमारी ढाई शंका का निवारण हो पाएगा, तो आप मुझे मेरी ढाई शंका का समाधान बताएं? मौलवी साहब कुछ देर सर पकडकर बैठे रहे। उन्हें सर पकड़ कर बैठा देखकर वे सज्जन सपत्नी वहां से चले गये। पर इस सारे वाकये से मेरे मन में जरुर एक शंका खड़ी हो गयी कि आखिर ये सज्जन कौन है? बाद में मुझे पता चला कि सज्जन आर्य समाज से जुड़े एक प्रतिष्ठित व्यक्तित्व है। यह सब जानकार मेरे मुंह से अचानक निकल पड़ा ''आर्य समाज अमर रहे, वेद की ज्योति जलती रहे।''

- राजीव चौधरी

वेद और वेदार्थ

वेद शब्द विद् सतायाम्, विद् ज्ञाने, विद् विचारेण विद् लृ लाभे इन चारों धातुओं से निष्पन्न होता है जिसका अर्थ है- जिसकी सदैव सत्ता हो, जो अपूर्व ज्ञान प्रद है, जो ऐहिक आमुष्मिक उभयविध विचारों का कोश हो और जो लौकिक लोकोत्तर लाभ-प्रद हो ऐसे ग्रन्थ को वेद कहते हैं। वेदों में सत्ता, ज्ञान, विचार और लाभ ये चारों गुण विद्यमान हैं। अब हम क्रमश: इन चारों गुणों पर विशेष विचार करते हैं।

1. सत्ता:- ईश्वरवादी सभी सम्प्रदायों में ईश्वर अनादि और अनन्त परिग्रहीत है। वेद ईश्वर की वाणी है। अत: वह भी अनादि एवं अनन्त है। स्मृति वचन है:-

अनादिनिधना नित्या वा गुत सृष्टा स्वम्भूवा। अर्थात् वेद स्वम्भू वह वाणी है जिसका ना ही कोई आदि है न कोई अन्त। अतएव वेद वाणी नित्य है। इस प्रकार वेदों की सत्ता त्रिकाल बाधित है। कदाचित कोई कुतार्किक वाणी शब्द को सुनकर आशंका करे कि लोक में तो वाणी त्रिकालबाधित नहीं होती, जागृत अवस्था में ही वाणी का व्यापार प्रत्यक्ष दृष्ट है। स्वप्न, सुषुप्ति और तुरीय अवस्था में तो वाणी के व्यापारी की कथमपि सम्भावना नहीं की जा सकती। अत: आस्तिकों के कथित भगवान के भी शयन काल में वाणी का अवरोध युक्ति संगत है। अत: उसे सदा अनुरुद्ध सत्ता सम्पन्न कैसे कहा जा सकता है यद्यपि यह शंका कुतर्क पर आश्रित है क्योंकि संसार में कोई भी दृष्टान्त सर्वाश में परिग्रहित नहीं हुआ करता। किन्तु सभी उपमाएं एक सीमा तक उपमेय, वस्तु के गुण दोषों की परिचायक हुआ करती हैं। ऐसी वेद को भगवान की वाणी कहने का तात्पर्य यही है कि शब्द व्यवहार एक मात्र वेद वाणी निरस्थूल शब्द राशि है। क्योंकि वचन अपौरुषेय है। अत: किसी पुरुष विशेष की वाणी से इसका सम्बन्ध स्वीकृत नहीं। अत: वेद को भगवान की वाणी न कह कर उसे भगवान का नि:श्वास कहा गया है। **अस्य महतो भूतस्य निश्वसितमेह्यवेद: समावेदोऽधर्वाडिरस:।**

यस्य निश्वसित लेदा:।

उक्त प्रमाणों में वेदों को भगवान का श्वासोच्छाश कहने का यह अभिप्राय है कि श्वास प्रयत्न साध्य वस्तु नहीं किन्तु निसर्ग जन्य है तथा जागृत, स्वप्न, सुषुप्ति और तुरीय अवस्था में जीवन पर्यन्त विद्यमान रहता है। अत: यह सुप्रसिद्ध है कि वेद कृत्रिम वस्तु नहीं, अपितु भगवान का सहज और विनाशशील हो परन्तु वेदों की सत्ता आदि सृष्टि से पूर्व भी थी और प्रलयानन्तर में भी अबाध रूप से अक्षुव्य बनी रहेगी। जैसे भगवान अनादि, अनन्त, अविपरिणामी है ठीक इसी प्रकार वेद भी अनादि, अनन्त और अविपरिणामी है।

2. ज्ञान :- वेद जहां प्रत्यक्ष, अनुमान और उपमान की सीमा पर्यन्त सीमित लौकिक ज्ञान की अक्षयनिधि है वहीं प्रत्यक्ष, अनुमान उपमान आदि से सर्वथा और सर्वदा अज्ञेय, अतीन्दिय, अवाड.मनगोचर लोकोत्तर ज्ञान के तो वे ही अन्धे की लकड़ी के समान आधारभूत हैं। वस्तुत: लौकिक ज्ञान वेदों का मुख्य प्रतिवाद्य विषय नहीं है। वाह्य वर्णन तो वैदिकों के शब्दों में केवल प्रत्यक्षानुवाद मात्र है। कुछ लोग कहते हैं कि ''अग्निर्हिमस्य भेषजम्'' वेद यह प्रत्यक्षानुवाद में भी उस कोटि का साहित्य है, जोकि आज के कथित भौतिक विज्ञानवादियों के समस्त उच्छल-कूद की पराकाष्ठा के परिणामों से सदैव एक कदम आगे रहता है। इस श्रुति का केवल यही अर्थ नहीं है कि ''अग्नि शीत की औषधि है'' अपितु वेद के इन शब्दों में उच्चकोटि का विज्ञान भी गर्वित है कि हिमानी प्रदेश में उत्पन्न होने वाली जड़ी-बूटियां अत्येव उष्ण होती हैं। शिलाजीत, केसर, संजीवनी और कस्तूरी आदि इस तथ्य की नई दर्शन है अथवा बर्फ बनाने का उपाय अग्नि ही है। अर्थात् इतनी डिग्री उष्णता पहुंचने पर तरल राशि बर्फ रूप में धनी भाव को प्राप्त हो जाती है। कहना न होगा कि वर्तमान भौतिक विज्ञानवादी वर्षो अनुसंधान करने के उपरान्त एकमुद्दत में वेद की उपर्युक्त मन्त्रांश द्वारा प्रतिपादिक हिम-विज्ञान को समझ पाये हैं। इसी प्रकार वेद प्रतिपादित अश्वत्थ विज्ञान शंखध्वनि से रोग-कीटाणु-विनाश विज्ञान श्री जगदीश चन्द्र बसु और सी.बी. रमण आदि भारतीय विज्ञानवेत्ताओं के चिरकालीन अनुसंधानों के उपरान्त अभारतीय वैज्ञानिकों तक अंशत: पहुंच गया है। इसी प्रकार 'हिमवत: प्रस्त्रवन्ती द्रोगभषेजम्' आदि वेद प्रतिपादित गंगाजल के हृदय रोगों की अचूक औषधि होने की बात अभी तक अनुसंधान कोटि में ही लटक रही है और वेदोक्त स्पर्श- विज्ञान की ओर तो अभी भौतिक विज्ञानवादी उन्मुख नहीं हो पाये हैं।

अभी तो विपञ्चीकृभूत तन्मात्राएं, अहंकार और महान् इन द्वारों की लम्बी मंजिल तय करनी पड़ेगी, तब कभी 'अव्युक्त' तत्व तक पहुंच हो पायेगी। उस समय साम्प्रतिक भौतिक विज्ञानवादियों द्वारा परमाणु पुरुष और प्रकृति ऐक्यभूत अर्धनारीश्वर की संज्ञा को धारण कर सकेंगे। कहने का तात्पर्य यह है कि वेदों में इतनी उच्च कोटि का वर्णन है कि जिसकी तह तक पहुंचने में अनुसंधायकों को अभी कई सहस्त्राब्दियां लग सकती हैं। हमने प्रसंगवश कतिपय पंक्तियां इस विषय पर इसलिए लिख छोड़ी हैं कि जिनसे वर्तमान भौतिक विज्ञान की चकाचौंध-चौंधियायी हुई भारतीय आंखों की भी साथ-साथ कुछ चिकित्सा हो सके। अब हम वेदों के मुख्य विषय की चर्चा करते हैं।

प्रत्यक्षेणानुमित्या वा यस्तूयानो न बुध्यते। एनं विदन्ति वेदेन तस्मात् वेदस्य वेदता।।

अर्थात् प्रत्क्षानुमान और उपमान आदि साधनों द्वारा जो उपाय नहीं जाना जा सके, वह उपाय वेद से जाना जा सकता है, यही वेद की वेदता है।

-डॉ. उदयन आर्य

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 20 जून से रविवार 26 जून, 2016

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2015-2017

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 23/24 जून, 2016

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2015-2017

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 22 जून, 2016

दस दिवसीय संस्कृत संभाषण शिविर सम्पन्न

संस्कृत शिक्षक संघ दिल्ली द्वारा दस दिवसीय संस्कृत संभाषण शिविरों का समापन समारोह सम्पन्न हुआ। संस्कृत संभाषण शिविरों की श्रृंखला में पहला शिविर रामनगर शाहदरा में सम्पन्न हुआ। जिसमें 60 प्रतिभागियों ने भाग लिया। दूसरा शिविर राजधानी पब्लिक स्कूल विकास नगर में आयोजित हुआ। इसमें 182 छात्रों ने बड़े उत्साह के साथ भाग लिया। तीसरा शिविर पश्चिम विहार में सम्पन्न हुआ । इस शिविर में अधिकांश वरिष्ठ नागरिक सम्मिलित हुए। सभी ने रुचि के साथ संस्कृत

संभाषण शिविरों में हिस्सा लिया। समापन समारोह में श्री के. एस. उपाध्याय ने कहा कि भौतिक विज्ञान की मुश्किल ग्रन्थियों का हल संस्कृत में है। संघ के अध्यक्ष डॉ. ब्रजेश गौतम ने कहा कि संस्कृत जीवन दर्शन को बताने वाली भाषा है। डॉ. वी. दयालु ने संस्कृत को सभी भाषाओं एवं संस्कृति को समझने हेतु आवश्यक बताया। शिविरों के आयोजन में डॉ. रीता शर्मा, श्री सन्दीप उपाध्याय, कु प्रीति , श्री शंकर दत्त पाण्डेय ने शिक्षण का कार्य किया। शिविर में श्री अनिल कुमार, डॉ. राजेश, श्री हरदेव आर्य, श्री पवन गुप्ता आदि ने सहयोग दिया।

प्रतिष्ठा में,

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नेतृत्व में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में

15वां आर्य परिवार युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन

आवेदन की अन्तिम तिथि : 25 जून, 2016

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नेतृत्व में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में 15वां आर्य परिवार युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन आर्यसमाज मन्दिर ए ब्लॉक जनकपुरी, नई दिल्ली में दिनांक 3 जुलाई 2016 को आयोजित किया जा रहा है। आर्य परिवारों से अनुरोध है कि अपने विवाह योग्य पुत्र-पुत्रियों के आर्य परिवारों से संबंध जोड़ने के लिए परिचय सम्मेलन में शीघ्र-अतिशीघ्र पंजीकरण कराने का कष्ट करें। पंजीकरण की **अन्तिम तिथि 25 जून, 2016 है।** इसके पश्चात् प्राप्त आवेदनों को तत्काल पंजीकरण माना जएगा और उनका परिचय पुस्तिका में प्रकाशन नहीं हो सकेगा। **पंजीकरण शुल्क 300/- रुपये।** आवेदन फार्म पृष्ठ 4 पर प्रकाशित किया गया है। फार्म **www. thearyasamaj.org** से डाउनलोड किया जा सकता है तथा फोटो प्रति भी मान्य है। अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें-

अर्जुन देव चड्ढा राष्ट्रीय संयोजक, मो. 9414187428

एस.पी. सिंह दिल्ली संयोजक, मो. 9540040324

स्वास्थ्य चर्चा

बच्चों द्वारा बिस्तर पर पेशाब करना

स्वास्थ्य चर्चा में बच्चों की आम बीमारी बिस्तर पर पेशाब करना और बार-बार पेशाब आने के कुछ घरेलू उपायों की चर्चा करते हैं-

बिस्तर पर पेशाब करना :- 1. बीज निकले चार मुनक्का सोते समय पानी के साथ एक सप्ताह खिलाने से बच्चा बिस्तर पर पेशाब करना बन्द कर देता है।

2. सिंघाडे की गिरी 50 ग्राम कूट छानकर इसमें खांड 50 ग्राम मिलाकर एक-एक चम्मच प्रात: सायं पानी से दें।

3. कुलंजन 50 ग्राम कूट छान कर शहद में मिलाकर एक-एक चम्मच प्रात: सायं चटाएं।

4. आंवला, जीरा काला 10-10 ग्राम पीसकर शहद में मिलाकर एक छोटी चम्मच रात को सोते समय आराम आने तक दें। 5. नागरमोथा 50 ग्राम कूट-छान कर शहद में मिलाकर एक-एक चम्मच प्रात: सायं बच्चे को तब-तक चटाएं जब-तक आराम न आ जाए।

बार-बार पेशाब आना : - 1. बादाम गिरी 5, खांड के साथ प्रात: सायं एक सप्ताह प्रयोग करें।

2. काले तिल अजवायन 3-3 ग्राम गुड़ में मिलाकर प्रात: सायं एक सप्ताह प्रयोग कराएं।

3. जामुन की गुठली की गिरी 15 ग्राम पीसकर एक-एक ग्राम पानी से प्रात: सायं पानी से दें।

4. कुलंजन 25 ग्राम कूट-छान कर 3 ग्राम को प्रात: पानी से सेवन कराएं।

5. दालचीनी 10 ग्राम पीसकर खांड 10 ग्राम मिला लें, दो ग्राम को पानी से रात को सोते समय दें।

उपरोक्त नुस्खे बच्चों के साथ-साथ बड़ों के लिए भी लाभदायक हैं। यदि किसी वयस्क को उपरोक्त शिकायत हो तो वह भी उपरोक्त नुस्खों को अपना सकते हैं।

वैद्य खेम भाई द्वारा रचित ''चिकित्सा सम्राट आयुर्वेद'' पुस्तक से साभार। यह पुस्तक दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के वैदिक प्रकाशन विभाग में उपलब्ध है। अपना आदेश मो. 09540040339 पर या सीधे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय 15 हनुमान रोड दिल्ली -110001 के पते पर भेज सकते हैं।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह